प्रिय भाई राजेश बजाज, उपस्थित भक्तगण,

‘ ‘दादीजी संग श्याम बाबा एवं बालाजी महोत्सव - 2023’’ असम के गोलाघाट जिले की इस हरी भरी मजदूरों की नगरी ओखा चाय बागान में आयोजित करने पर और यहाँ हजारों की तादाद में भक्तों का समुह देखकर मैं गद्गद् हो गया और मैं इस आयोजन हेतु भाई बजाज को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही आयोजन को सफल बनाने हेतु गोलाघाट समाज का जो श्रेय है, उनकी भी काबिले तारीफ करता हूँ। यह एक महोत्सव ही नहीं, एक बहुत बड़ा संगम है, जहाँ इस हरियाली घाटी में राजस्थान के तीन मुख्य देव सतीदादी, श्याम बाबा और बालाजी यहाँ साक्षात विराजमान हैं। हमारे यहाँ के गरीब मजदूर भाई इन तीनों देव से साक्षात्कार हेतु व इनके गुणगान श्रवण हेतु राजस्थान नहीं जा सकते, शायद इसी वजह से तीनों देवों को पूर्व से पडऩे वाली सूर्य की किरणों की लालीमा उत्तर में खड़ी कार्बी आंग्लाग की पहाडिय़ों, दक्षिण में कलकलाती धनशिरी नदी और पश्चिम में लहलहाते खेत व चाय बागान की पत्तियों के बीच घिरी हरियाली घाटी ओखा में तीनों देवों को आमंत्रित कर यहाँ की धरा को पवित्र बना दिया है, जिसका लाभ इस अंचल के सभी लोगों को मिलेगा ।

महोत्सव में उपस्थित खाटू श्याम जी मन्दिर के महंत श्री मोहनदास जी महाराज, महाराज श्री श्याम सिंह जी चौहान, सरदारसहर इच्छापूरण बालाजी के महंत श्री घनश्याम दासजी जोशी, श्री विकाश जी पुजारी, सालासर को भी मैं शुभकामनाएं देता हूँ। असम के विभिन्न कोने-कोने से, गुवाहाटी, नगाँव, बोकाखात, तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, शिवसागर, जोरहाट, बड़पथार, सोरुपथार आदि जगहों से पधारे सभी भक्तगणों को भी मैं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। मुझे जानकर खुशी हुई कि यह महोत्सव यहाँ दूसरी बार मनाया जा रहा है। मैं चाहूँगा कि गोलाघाट के लोग मिलकर इस आयोजन को और बड़े रूप में व हर वर्ष इसका आयोजन करें, जिससे लोगों में धार्मिक भावना के साथ-साथ आपसी भाईचारा, सद्भाव भी बढ़े और असमवासी  विकास के पथ पर अग्रसित हो सकें।

राजस्थान में सतियों का इतिहास पुराना है, जहाँ ढ़ाढ़ण, झुँझुनूं, फतेहपुर, कोटड़ी, विदासर, आदि विभिन्न जगहों पर सतियों का मंदिर अवस्थित है। इसकी पूजा-अर्चना हम कुलदेवी के रूप में करते हैं और हम दादी के नाम से पुकारते हैं। एक और बालाजी प्राचीन मंदीर सालासर धाम में, जहां एक दिन में हजारों लोगों की भीड़ उमड़ती है, वही हाल खाटू धाम के श्याम मंदिर का है। आप लोगों ने बर्बरीक का नाम व कहानी सुनी होगी, मैं नहीं चाहता कि पूरी कहानी आपको बताऊं, बल्कि बर्बरीक जी खाटू वाले श्याम हैं। कलयुग में इन्हें तीन बाण धारी, 'हारे का सहारा' , 'खाटू नरेश' आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

आज इस महोत्सव के उपलक्ष्य में भजन सम्राट लखा सिंह मुंबई से, अन्य गायक स्वाति अग्रवाल, मधुस्मिता भट्टाचार्य व मयंक अग्रवाल भजनों की गंगा बहायेंगे और तीनो देवों को रिझायेंगे, जिसके लिये आज सभी भक्तों के मन में एक चाह है कि हम उन्हें सुनें। मैं मेरा भाषण लम्बा नहीं करना चाहता।

अन्त में मैं एक बार पुन: आप सभी को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और तीनों देव से प्रार्थना करता हूँ कि गोलाघाट वासियों सहित पूरे असम वासियों की दिन दुनी और रात चौगुनी वृद्धि करें एवं सबको स्वास्थ्यवान रखें ।

मुझे इस आयोजन में सरीक होने का जो मौका दिया आप लोगों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसके लिए अपने आप को मैं सौभाग्यशाली समझता हूँ।

आप लोगों को शुभकामनाएं देते हुए मैं मेरा मन्तव्य यहीं विराम देता हूँ एवं तीनों देवों को मनाते हुए आज की शाम को इस घाटी को राजस्थान में तब्दील कर दें।

जय आई असम। जय हिन्द। जय भारत।